संस्थान समाचार

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी) संस्था और उसके केंद्रों की समाचार पत्रिका

■ प्रकाशन : वर्ष : 11 ■ अंक : 68 ■ जून 2025

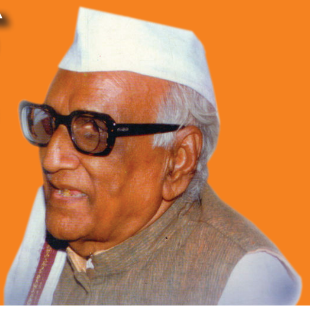

राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह

भारत मंडपम में आयोजित स्वर्ण जयंती समारोह में पुस्तक का लोकार्पण करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, विदुषी सुधा मूर्ति व अन्य।

26 जून 2025 को नई दिल्ली के प्रगति मैदान स्थित भारत मंडपम में राजभाषा विभाग की स्वर्ण जयंती का भव्य समारोह संपन्न हुआ। समारोह में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। कार्यक्रम में दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, केंद्रीय गृह राज्यमंत्री बंडी संजय कुमार, सांसद भर्तृहरि माहताब, सुधांशु त्रिवेदी, श्रीमती सुधा मूर्ति, अतुल कोठारी, राजलक्ष्मी कृष्णन, अंशुल आर्या ने भी हिस्सा लिया। केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रोफेसर सुनील बाबू राव कुळकर्णी ने भी समारोह में सहभागिता की। ❑

'भारत को जानिए' क्विज में केंद्रीय हिंदी संस्थान के छात्र ने जीती बाजी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ क्विज के विजेताओं संग संस्थान का छात्र निकोलस मराज (बाएं से तीसरा)।

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा (सत्र 2023-24) के छात्र निकोलस मराज ने त्रिनिदाद और टोवैगो में 'भारत को जानिए' क्विज प्रतियोगिता में जीत हासिल की है। अपनी पांच दिवसीय यात्रा के दौरान त्रिनिदाद और टोवैगो पहुँचे प्रधामंत्री नरेन्द्र मोदी ने क्विज के विजेता युवाओं शंकर रामजतन, निकोलस मराज और विंस महतो से मुलाकत की तथा विजेताओं को प्रोत्साहित किया। प्रधानमंत्री ने अपने सोशल मीडिया पर तस्वीरे साझा की और लिखा कि इस क्विज ने दुनियाभर के युवाओं को व्यापक भागीदारी के लिए प्रेरित किया है और भारत के साथ हमारे प्रवासी जुड़ाव को गहरा किया है। ❑

'एक पृथ्वी–एक स्वास्थ्य' के लिए किया योगाभ्यास

11वाँ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2025 को 'एक पृथ्वी : एक स्वास्थ्य के लिए योग' थीम के साथ विश्वभर में मनाया गया। केंद्रीय हिंदी संस्थान के आगरा मुख्यालय तथा इसके सभी आठ क्षेत्रीय केंद्रों पर 'योग दिवस' के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। संस्थान के वरिष्ठ पदाधिकारियों के नेतृत्व में सभी शैक्षणिक एवं प्रशासनिक वर्ग के सदस्यों ने बढ़ चढ़कर कार्यक्रम में हिस्सा लिया। प्रस्तावना संबोधन में व्यक्ति का स्वास्थ्य पर्यावरणीय संतुलन और सतत विकास की गति में तेजी लाने के उद्देश्य से योग की भूमिका को रेखांकित किया गया। इस दौरान सभी केंद्रों पर कुशल योग प्रशिक्षकों की निगरानी में उपस्थित कार्मिकों ने योग के तौर तरीकों के बारे में जानकारी प्राप्त की, अपने-अपने तन को थोड़ा झुकाया, थोड़ा मोड़े और जीवन में चुस्ती लाने के लिए आसनों प्राणायाम आदि का अभ्यास किया।

मुख्यालय परिसर में निदेशक की उपस्थिति में योगाभ्यास करते संस्थान के सदस्य गण।

मुख्यालय आगरा – 21 जून 2025 केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में "एक पृथ्वी - एक स्वास्थ्य के लिए योग" थीम आधारित अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। आयुष मंत्रालय भारत सरकार के दिशा निर्देशानुसार सर्वप्रथम अटल बिहारी वाजपाई अंतरराष्ट्रीय सभागार में प्रातः 6:30 में योग दिवस संगम के अवसर पर माननीय प्रधान मंत्री श्री मोदी जी की अगुवाई में ऑनलाइन माध्यम से संस्थान के निदेशक के साथ सभी कार्मिक और शैक्षणिक सदस्यों ने भाग लिया तथा प्रधानमंत्री की योग और स्वास्थ्य संबंधी ओजस्वी भाषण को आत्मसात किया।

तदुपरांत केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा, के प्रांगड़ में एक विशाल योगाभ्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

आयोजन के दौरान सभी प्रतिभागियों को योग कीट वितरीत की गई। इस दौरान सभी ने हाथ जोड़कर योग प्रार्थना 'ॐ योगेन चित्तस्य पदेन वाचां।मलं शरीरस्य च वैद्यकेन॥ योऽपाकरोत्तं प्रवरं मुनीनां। पतञ्जलिं प्राञ्जलिरानतोऽस्मि॥ का वाचन किया। इस दौरान संस्थान के योग प्रशिक्षक अरविंद कुमार शुक्ला (अतिथि प्रवक्ता योग विज्ञान) ने उपस्थित सभी सदस्यों को नियम पूर्वक योगाभ्यास करवाया। 30 मिनट के योगाभ्यास के बाद 15 मिनट तक प्राणायाम तथा ध्यान की अभ्यास भी किया गया।

योग प्रशिक्षक ने जीवन को खुशहाल बनाने तथा बीमारियों दूर रहने के लिए सारगर्भित वक्तव्य दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने अपनी बात रखते हुए गीता के दूसरे अध्याय के 50वें श्लोक का संदर्भ दिया तथा कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में "योगः कर्मसु कौशलम्" अर्थात् आप सभी लोग अपने-अपने कार्यों में कुशलता प्राप्त करो और बंधुत्व की भावना से कार्य करते रहो का उपदेश दिया है।

उन्होंने कहा कि सच्चे अर्थों ईर्ष्या, द्वेष, उपेक्षा का परित्याग ही योग है। निदेशक महोदय ने जोर देकर कहा कि आज संपूर्ण विश्व योग को अपना रहा है इसलिए हम भारतीयों को भी योग को अपने जीवन का अहम हिस्सा बना के प्रतिदिन कम से कम एक घंटे योगाभ्यास करना चाहिए।

योग से रहता है तन-मन स्वस्थः प्रो. सुरेन्द्र दुबे

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर संस्थान कर्मियों को संबोधित करते हुए हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष प्रोफेसर सुरेंद्र दुबे।

दिल्ली केंद्र – अंतरराष्ट्रीय 'योग दिवस' के अवसर पर दिल्ली केंद्र पर आयोजित योगाभ्यास कार्यक्रम की अगुवाई उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल प्रो. सुरेंद्र दुबे ने की। इस मौके पर शैक्षिक एवं प्रशासनिक वर्ग के सदस्य उपस्थित रहे। केंद्र द्वारा योग की कलाओं एवं आसनों से परिचित करवाने हेतु योग शिक्षक श्री कौशल सिंह को आमंत्रित किया गया।

इस अवसर पर उपाध्यक्ष प्रो. दुबे ने सभी को संबोधित करते हुए योग के महत्व को विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा

शेष पृष्ठ 7 पर

हैदराबाद विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने संस्थान से ग्रहण की प्रशिक्षुता

नई शिक्षा नीति (2020) के तहत भारत सरकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा दिनांक 6 जून 2025 से 26 जून 2025 तक प्रशिक्षण (इटर्नशिप) कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में हैदराबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अध्ययनरत दो विद्यार्थियों क्रमशः थानाफत लपसुरिकुल तथा थिदारत वांगमेनी ने प्रशिक्षुता प्राप्त की। प्रशिक्षण दौरान विद्यार्थियों को संस्थान के अलग-अलग विभागों में विभागीय कार्य प्रकृति के अनुसार शिक्षण कार्य की व्यवस्था की गई जिसमें अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान तथा प्रयोजन मूलक हिंदी विषय के अंतर्गत शीर्षकों यथा भाषा प्रयोगशाला, भाषा के अनुप्रयोग, कारक और लिंग व्यवस्था पर पावर प्वांइट प्रस्तुति (पीपीटी) बनाना और प्रस्तुत करना, संज्ञा/सर्वनाम/विशेषण पर पावर प्वांइट प्रस्तुति (पीपीटी) बनाना, प्रस्तुत करना, अध्येता कोश निर्माण का परिचयात्मक प्रशिक्षण, सामान्य शब्दकोश निर्माण का सामान्य परिचय, परियोजना प्रस्ताव तैयार करना, शोध प्रविधि का प्रशिक्षण, पाठ योजना भाषा शिक्षण प्रविधि, पाठ योजना-साहित्य शिक्षण प्रविधि, संपादन और अशुद्धि शोधन प्रशिक्षण, पुस्तकालय में पुस्तक वर्गीकरण का प्रशिक्षण, भाषा प्रलेखन हेतु क्षेत्र कार्य का प्रशिक्षण, कौशल आधारित माइक्रो मॉडयूल कार्यक्रम परिकल्पना/आयोजन/संचालन एवं प्रतिवेदन प्रस्तुतीकरण से संबंधी जानकारी विद्यार्थियों को दी गई।

प्रशिक्षण सत्र के दौरान हैदराबाद विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष के अनुरोध पर आए विद्यार्थियों ने सीखने में अपनी गहरी रुचि दिखाई तथा सभी अध्यापकों के प्रति अपना आभार प्रकट किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु डॉ. परमान सिंह, (सहायक प्रोफेसर) को निदेशक द्वारा सुपरवाईजर के रूप में नामित किया गया था। प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजन में डॉ. जोगेन्द्र सिंह मीणा, (विभागाध्यक्ष अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग) का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन कार्यक्रम दिनांक 26.06.2025 को समिति कक्ष में आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्रो. हरिशंकर, (शैक्षिक समन्वयक), सभी विभाग के विभागाध्यक्ष, कुलसचिव, पुस्तकालयाध्यक्ष तथा डॉ. परमान सिंह, प्रशिक्षण सुपरवाइजर उपस्थित रहे। ❑

सहभागिता

हैदराबाद की अग्रणी 'सूत्रधार साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था, हैदराबाद' ने 29 जून 2025 को नामपल्ली स्थित हिंदी प्रचार सभा में अपना पंचम वार्षिकोत्सव प्रो. ऋषभदेव शर्मा की अध्यक्षता में मनाया। इस अवसर पर संस्था की, संस्थापक श्रीमती सरिता सुराणा तथा पदाधिकारियों द्वारा केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे का विशेष अतिथि के रूप में शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया। ❑

व्याख्यान

हिंदी और कृत्रिम बुद्धि : प्रो. धनजी प्रसाद दिल्ली केंद्र के प्रो. धनजी प्रसाद द्वारा भारत के महारजिस्ट्रार कार्यालय, नई दिल्ली के राजभाषा अनुभाग द्वारा आयोजित चतुर्थ अर्द्ध दिवसीय सम्मेलन में 27 जून 2025 को मुख्य वक्ता के रूप में 'हिंदी और कृत्रिम बुद्धि' पर विशेष व्याख्यान दिया गया। ❑

जड़ों से जुड़ने का ज़रिया है लोकसाहित्य : निदेशक

केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में लोक साहित्य, अध्येता कोश एवं अन्य विविध विषयों से संबंधित कोश निर्माण के लिए विषय विशेषज्ञों के साथ ऑनलाइन बैठक आयोजित की गई। दिनांक 30 जून 2025 को आयोजित बैठक में अपनी बात रखते हुए निदेशक ने कहा कि नई शिक्षा नीति (2020) के अंतर्गत देश के विद्यालयों, महाविद्यालयों आदि में लोक-साहित्य को विषय के रूप में समायोजित करने तथा राष्ट्रीय स्तर पर इसे विशिष्ट पहचान देने में संस्थान के प्रयासों के साथ-साथ विषय विशेषज्ञों द्वारा किए जा रहे कार्यों की महत्ती भूमिका होगी।

प्रो. कुळकर्णी ने कहा कि नई शिक्षा नीति (2020) में लोक-साहित्य को प्रमुखता से रेखांकित किया गया क्योंकि यह न केवल भारतीय संस्कृति और भाषाओं को बढ़ावा देता है बल्कि छात्रों को उनकी जड़ों से जुड़ने और उनकी रचनात्मकता को विकसित करने की भी मदद करता है। लोक साहित्य भारतीय भाषाओं में रचा गया है। और यह भाषा सीखने और समझने का महत्वपूर्ण जरिया है।

संस्थान के पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की अध्यक्षा डॉ. मीनाक्षी दुबे के संयोजन में आयोजित ऑनलाइन बैठक में शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर, प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल (संयोजक अवधी मुहावरा कोश) आदि ने हिस्सा लिया।

'जेलियांग लोक साहित्य' की सामग्री का संकलन, चयन, व्यवस्थापन, आदि के लिए वित्तीय कार्यशाला दिनांक 07.06.2025 से 08.06.2025 तक अपने कार्यक्षेत्र हेराका विद्या भारती स्कूल, जालुके बी., जिला-पेरेन नागालैण्ड में विद्वानों के साथ आयोजित की गई। इस कार्यशाला में श्रीमती अर्यक्रो (जेलियांग भाषा संपादक), श्रीमती हेउल्वावले, अध्यापिका, श्रीमती पौंडेउलुंग्ले, अध्यापिका विशेषज्ञ, श्रीमती रांगबामे, अध्यापिका जेलियांग विशेषज्ञ, श्री इदम्तुई त्रियामे, सामाजिक कार्यकर्ता एवं लोक गीतों के जानकार, श्रीरामहेई, अध्यापक एवं लोककथा संकलन कर्ता, डॉ. थुम्बई, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, दीमापुर, नागालैंड (हिदी भाषासंपादक) ने भाग लिया।

'आदिवासी लोक साहित्य' की सामग्री चयन, संकलन, व्यवस्थापन करने हेतु द्वितीय कार्यशाला दिनांक 26.06.2025 से 27.06.2025 तक अपने कार्यक्षेत्र लोकनेते माणिकराव गावीत महाविद्यालय विसरवाडी ता. नवापुर जिला नंदूरवार महाराष्ट्र में विद्वानों / विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई। इस कार्यशाला में डॉ. जयश्री गावित, महाराष्ट्र (हिंदी संपादक), प्रो. पुष्पा गावित (भाषा संपादक), डॉ. शिवाजी राठौड़, डॉ. लता गावित, डॉ. मंदा गावित, प्रा. योगेश रघुवंशी, प्रो. अनिल गावित, विषय-विशेषज्ञों ने लिया भाग।

कन्नड़ - हिंदी पर्यायवाची शब्दकोश निर्माण संबंधी पाचवीं कार्यशाला दिनांक 27.06.2025 से 02.07.2025 तक संस्थान के मैसूर केंद्र में प्रो. टी. आर. भट्ट, (संपादक) सेवानिवृत्त प्रो. एवं विभागाध्यक्ष, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़, कर्नाटक (संपादक) डॉ. श्रीधर हेंगड़े, हिंदी विभाग, फील्ड मार्शल, के.एम करियप्पा कॉलेज, मैंगलूर विश्वविद्यालय, मदिकेरी, कोडागु, कर्नाटक प्रो. संदीप रणधीरकर, एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी विभाग, डॉ. परमेश्वर हेगड़े, डॉ. आशा भद्री, हुबली धारवाड, विषय-विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई।

अवधी मुहावरा शब्दकोश निर्माण संबंधी तृतीय कार्यशाला दिनांक 30.06.2025 से 05.07.2025 तक आगरा (मुख्यालय) में प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल (संयोजक), प्रो. नरेश मिश्र, रोहतक, प्रो. अखिलेश कुमार शंखधर, (इंफाल), श्री कृष्णा शंकर मिश्र, प्रयागराज, डॉ. सुरूचि मिश्र, बिलासपुर, विषय-विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई।

'संबंलपुरी लोक साहित्य' की सामग्री चयन, संकलन, व्यवस्थापन करने हेतु तृतीय कार्यशाला दिनांक 23.06.2025 से 25.06.2025 तक केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा मुख्यालय में आयोजित की गई।

इस कार्यशाला में प्रो. अरुण होता हिंदी विभाग, पश्चिम बंगाल, राज्य विश्वविद्यालय, बारासात, कोलकाता, श्री सिद्धार्थ पांडा, प्रवक्ता ओड़िया धमा. ओड़िशा, डॉ. स्वयं प्रकाश पांडा, प्रवक्ता, ओड़िया विभाग, धनकौड़ा, संबलपुर, ओड़िशा, डॉ रश्मिरेखा जेना, प्रवक्ता हिंदी विभाग, पश्चिम बंगाल राज्य विश्वविद्यालय, कोलकाता ने भाग लिया। ❑

297वें नवीकरण कार्यक्रम का आयोजन

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के मैसूर केंद्र द्वारा कर्नाटक राज्य के चिक्कबलापुर जिले के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के लिए दिनांक 09.06.2025 से 21.06.2025 तक 12 दिवसीय 297वें हिंदी शिक्षक नवीकरण कार्यक्रम का आयोजन निदेशक, प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी जी की अध्यक्षता में आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 56 शिक्षकों (33 महिला एवं 23 पुरुष) ने सहभागिता की। बी. जी.एस. पॉलीटेक्निक कॉलेज, एस. जे. सी. आई. टी. कैम्पस, चिक्कबलापुर, कर्नाटक में आयोजित उद्घाटन सत्र के दौरान कार्यक्रम के संयोजक डॉ. रणजीत भारती, क्षेत्रीय निदेशक केंद्रीय हिंदी संस्थान, मैसूर केंद्र, श्रीनिंगराजप्प के.बी. (उप-निदेशक-प्रशासन) चिक्कबलापुर, श्रीमुनिकेम्पेगौड़ाएम. उप निदेशक शिक्षा विभाग डाइट (विकास), चिक्कबल्लापुर, डॉ. कोयल विश्वास (सहआचार्य-माउंट कार्मल कॉलेज, बैंगलुरु) एवं डॉ. मंजुनाथ, (प्राचार्य), बी. जी.एस. पॉलिटेक्निक कॉलेज उपस्थित रहे। औपचारिक दीप प्रज्जवलन, संस्थान द्वार तैयार स्वागत एवं संस्थान गीत के साथ कार्यकम का शुभारंभ हुआ। सहभागी सह-शिक्षक श्रीमती निर्मला ने स्वागत वक्तव्य दिया जबकि मंच का संचालन सहभागी सह-शिक्षक श्री राजशेखर द्वारा किया गया।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए श्री निंगराजप्पके.बी. ने कहा कि हिंदी के शब्दों पर लकीर (शिरोरेखा) हिंदी शिक्षकों के नसीब की रेखा है। जो हिंदी को विशेष पहचान दिलाती है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्रीमुनिकेम्पेगौड़ा.एमने कहा कि कार्यक्रम शिक्षकों को और अच्छे से पढ़ाने में सुविधा प्रदान करेगा, क्योंकि छात्रों को अच्छी शिक्षा देने के लिए शिक्षक का अद्यतन होना जरुरी होता है।

कार्यक्रम के संयोजक एवं पाठ्यक्रम प्रभारी क्षेत्रीय निदेशक, मैसूर केंद्र ने नवीकरण कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में सहभागियों को बताया। उन्होंने कहा कि एक सच्चा शिक्षक हमेशा विद्यार्थी की तरह सीखने के लिए तत्पर रहता है। कार्यक्रम के प्रथम दिन सहभागी शिक्षकों का पंजीकरण एवं पूर्व परीक्षा ली गई। कार्यक्रम के दौरान दिनाँक 17.06.2025 को शैक्षिक भ्रमण का आयोजन भी किया गया। जिसके अंतर्गत कोलार के उच्च प्राथमिक विद्यालय तथा केजीएफ, कर्नाटक का भ्रमण किया गया। कार्यक्रम के समाप्ति से एक दिन पूर्व दिनांक 20.06.2025 को सहभागी शिक्षकों का ऑनलाइन पर-परीक्षण लिया गया। जिसके अनतर्गतशीर्ष तीन स्थान प्राप्त करने वाले सहभागी शिक्षकों को प्रथम, द्वीतीयएवं तृतीय पुरस्कार के रूप में संस्थान की पुस्तकें दी गई। कार्यक्रम के अंतिम दिन समापन सत्र से पूर्व कक्षा के साथ-साथ संस्थान की पुस्तक बिक्री का कार्य किया गया।

समापन सत्र की अध्यक्षता माननीय निदेशक, प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने आभाषी माध्यम से की। इस दौरान सहभागी शिक्षकों ने निदेशक महोदय के समक्ष कार्यक्रम संबंधी फीडबैक प्रस्तुत गया। उसके बाद निदेशक ने अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए सभी सहभागियों को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की शुभकामना दी। तत्पश्चात उन्होंने इतनी अच्छी सख्या में सहभागिता के लिए सभी प्रतिभागियों का आभार प्रकट किया। इस दौरान कार्यक्रम के सहभागी शिक्षकों द्वारा तैयार की गई हस्तलिखित पत्रिका का विमोचन किया गया। इस सत्र के अंतर्गत सहभागी शिक्षकों द्वारा सभी अतिथियों एवं शिक्षकों का सम्मान किया गया। अंत में क्षेत्रीय निदेशक द्वारा सभी सहभागी शिक्षकों, अथिथियों एवं अतिथि व्याखाताओं का धन्यवाद ज्ञापन किया गया। इस दौरान चिक्कबलापुर से अतिथि श्रीमुनिकेम्पेगौड़ा. एम, डॉ. मंजुनाथ, बैगलोर से अतिथि व्याख्याता डॉ. लता चौहान, डॉ. कोयल विश्वास, डॉ. कौशल कुमार पटेल, मैसूर केंद्र से क्षेत्रीय निदेशक एवं श्री राघवेंद्र उपस्थित थे। ❑

संपादकीय

योगः कर्मसु कौशलम्

प्रिय पाठकों,

यह एक सामान्य अनुभव है कि 'अवकाश के दिनों में काम और बढ़ जाता है'। जून के महीने में पारंपरिक रूप से संस्थान में अध्ययन-अध्यापन का कार्य स्थगित रहा किंतु प्रशासनिक, शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ अन्य तरह की सभा-संगोष्ठियों के आयोजनों का सिलसिला बदस्तूर चलता रहा। 05 जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' तथा 21 जून को 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' पर संस्थान के मुख्यालय सहित सभी केंद्रों पर कार्यक्रम आयोजित हुए।

भारतीय दर्शन में 'लोक' और 'योग' दोनों ही जीवन के दो ऐसे स्तंभ हैं जो व्यक्ति को बाहरी और आंतरिक संतुलन सिखाते हैं। लोकसाहित्य जहाँ जीवन के अनुभवों की सहज अभिव्यक्ति है, वहीं योग उन अनुभवों को आत्म-संयम और आत्म-साक्षात्कार में बदलने का माध्यम। जब छात्र लोकगीतों, कहावतों और कथाओं के जरिए अपनी संस्कृति की गहराई को समझते हैं और योग के माध्यम से तन-मन को अनुशासित करते हैं, तो वे न केवल अच्छे विद्यार्थी बल्कि संवेदनशील नागरिक के रूप में विकसित होते हैं। वर्तमान समय में जब बनावटीपन ने हमारी जीवनशैली पर प्रभाव डाला है, ऐसे में लोकसाहित्य हमें हमारी जड़ों से जोड़ता है और योग हमें अपने भीतर झांकने की प्रेरणा देता है। दोनों ही आत्मिक और सामाजिक विकास की राह में प्रकाश स्तंभ का कार्य करते हैं।

नई शिक्षा नीति (2020) के आलोक में केंद्रीय हिंदी संस्थान हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं बोलियों के संरक्षण, संवंधन और विकास के लिए सतत प्रयत्नशील है। पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग द्वारा इस महीने जेलियांग, संबलपुरी और आदिवासी लोक-साहित्य पर विशेष कार्य संपन्न हुए। लोक-साहित्य जिसे जनसाधारण का साहित्य भी कहा जाता है किसी भी क्षेत्र की संस्कृति तथा सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। यह मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चला आता है और इसमें लोकगीत, लोकनाट्य, कहावतें तथा पहेलियाँ आदि शामिल रहते हैं। शैक्षणिक संस्थानों में लोकसाहित्य को शामिल करने से छात्रों को अपनी संस्कृति और विरासत को समझने में मदद मिलती है। यह न केवल छात्र के ज्ञान और समझ को बढ़ाता है बल्कि उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक जागरूकता, रचनात्मकता, कल्पनाशीलता और भाषाकौशल को नई धार देते हुए विकसित करता है।

आज का युग कृत्रिम है। हमारी भाषा, हमारे रीतिरिवाज, हमारा विवेक, हमारी नीतिमत्ता, हमारा जीवन, सभी कृत्रिम होता जा रहा है। यहाँ तक कि सामाजिक और कौटुंबिक व्यवहारों में भी हम औपचारिक हो रहे हैं। नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं के साथ-साथ लोकसाहित्य पर बल दिया गया है क्योंकि लोक जीवन की जैसी सरलतम, नैसर्गिक तथा अनुभूतिमयी अभिव्यंजना का चित्रण लोकगीतों तथा लोककथाओं में मिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। लोकसाहित्य में लोकमानस का ह्दय बोलता है। प्रकृति स्वयं गाती-गुनगुनाती है। लोकजीवन में पग-पग पर लोकसंस्कृति के दर्शन होते हैं। लोकसाहित्य उतना ही पुराना है जितना कि मानव जीवन, इसीलिए उसमें जन-जीवन की प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक समय और प्रकृति सभी कुछ समाहित है। लोकसाहित्य का एक रूप हमें भावाभिव्यक्तियों की शैली में भी मिलता है जिसमें लोक का मंगल भावनाओं से ओत-प्रोत होना सिद्ध होता है। जैसे- कोई भी दुकानदार 'दुकान बंद करने' की बात से ही सहम जाता है और 'दुकान बढ़ाने' की बात करता है। दीपक 'बुझाने' की जगह लोकसाहित्य में 'दीपक को ठंडा' करना अथवा बढ़ाने की बात होती है। हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों को उधार लेकर कहे तो 'लोकसाहित्य वह है जो अनुभव, श्रुति और परंपरा को सिरहाने रखकर सोता है, इसके ज्ञान का आधार पोथी नहीं होती'। तात्पर्य यह है कि लोकसाहित्य व्यक्ति को जड़ों से जोड़कर रखता है।

जहाँ तक जुड़ने और जोड़ने की बात है तो योग (युज् धातु से बना) भी जोड़ने का साधन है। दरअसल योग तन और मन को जोड़ने का प्रकल्प है। 'योग कर्मसु कौशलम्' यानि कर्म में कुशलता ही योग है। तन की स्वस्थता मन को अच्छा करने के लिए प्रेरित करती है। योग हमें चित्त को व्यवस्थित रखने की शिक्षा देता है। हम सभी जानते है शिक्षा मूलतः जीवन जीने के लिए दिशा और दर्शन प्रदान करती है। यह भी मानकर चला जाता है कि एक शिक्षित व्यक्ति स्वयं का जीवन तो सुचारू रूप से चलाता ही है शिक्षा के संस्कार उसे सुंदर संसार गढ़ने के लिए भी प्रेरित करते हैं। योग की शिक्षा-दीक्षा सोने में सुगंध जैसा है। 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' अथवा 'योग कर्मसु कौशलम्' हमें दत्तचित्त होकर कार्य को संपन्न करने का सूत्र प्रदान करते हैं। जीवन में योग को अपनाना इसलिए भी बहुत जरूरी है, अगर व्यक्ति इंद्रियों को काबू करने की ओर प्रस्थान करता है तो वह कर्मयोगी बनने की ओर अग्रसर है। लेकिन इसके लिए यह भी जरूरी है कि हमारे प्रतिदिन के छोटे-छोटे कामों में संतुलन हो, व्यवहार में सुधार हो, वाणी पर नियंत्रण हो, आचरण में सुचिता और नैतिकता हो तो यह कर्म योगी बनने की ओर एक सार्थक कदम होगा।

आज की भागदौड़ भरी दुनिया में, जहाँ मानसिक तनाव और भौतिकता हावी होती जा रही है, योग और लोकसाहित्य हमें हमारी मिट्टी की खुशबू से जोड़ते हैं। ये दोनों ही हमें यह याद दिलाते हैं कि जीवन केवल भौतिक उपलब्धियों का नाम नहीं है बल्कि आत्मिक संतुलन, सांस्कृतिक चेतना और करुणामयी दृष्टिकोण से जीने की कला भी है।

प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी
निदेशक

बोली से शुरू हिंदी बन रही है वैश्विक भाषा : निदेशक

हिंदी की यात्रा बोली के रूप में शुरु हुई थी। तमाम तरह के उतार-चढ़ाव, समर्थन-विरोध के झंझावातों को झेलते हुए सीढ़ी दर सीढ़ी आगे बढ़ती रही। आज हिंदी संपर्क की भाषा, साहित्य की भाषा के साथ-साथ रोजगार की भाषा बन चुकी है। दुनियाभर में हिंदी का मान-सम्मान बढ़ा है। कार्यव्यापार में सुगमता के लिए विदेशों में हिंदी भाषा के प्रति लोगों में ललक दिखाई दे रही है। हमें इसे और विस्तार देने के लिए प्रतिबद्ध होकर काम करना होगा।

उक्त बातें केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कही। मौका था संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र हैदराबाद द्वारा आयोजित 485वें नवीकरण पाठ्यक्रम के समापन समारोह का। दिनांक 14 जून 2025 को जीवनानंद स्मारक महाविद्यालय करमनी कुप्पन पांडिचेरी के सभागार में प्रो. कुळकर्णी की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पुदुच्चेरी सरकारी महाविद्यालय, पुदुच्चेरी की सह-आचार्य डॉ. डी. उमादेवी एवं विशिष्ट अतिथि शारदा गंगाधरन महाविद्यालय, पुदुच्चेरी के सहायक आचार्य डॉ. जे. सुरेंद्रन, सम्मानित अतिथि के रूप में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा चेन्नई एवं त्रिचि के कार्यकारी समिति सदस्य डॉ. एन. सेंदिल कुमरन पाठ्यक्रम संयोजक संस्थान, के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे एवं पाठ्यक्रम प्रभारी डॉ. फत्ताराम नायक तथा डॉ. दीपेश व्यास मंच पर उपस्थित रहे।

समापन समारोह कार्यक्रम का शुभारंभ द्वीप प्रज्ज्वलित कर तथा सरस्वती वंदना द्वारा किया गया। इसके पश्चात स्वागत गीत, संस्थान गीत एवं अतिथियों का प्रतिभागियों द्वारा स्वागत एवं परिचय प्रस्तुत किया। प्रतिभागियों द्वारा अतिथियों का शॉल एवं पुष्पगुच्छ द्वारा स्वागत सम्मान किया गया। क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे द्वारा मंचस्थ अतिथियों का स्वागत सम्मान संस्थान के अंगवस्त्र तथा माला पहनाकर किया गया। इस अवसर पर छात्रा पूर्विका ने भरतनाट्यम व छात्रा हेमप्रिया ने राधा कृष्ण की भक्ति पर आधारित नृत्य प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया तथा सामूहिक लोकनृत्य 'कोलाट्टम' प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने आभासीय मंच के माध्यम से प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमें अपनी मातृभाषा से प्यार करना चाहिए। उसकी शिक्षा भी लेनी और देनी चाहिए। लेकिन साथ ही साथ हमें हिंदी भाषा को भी आत्मसात करने की आवश्यकता है, जो वैश्विक स्तर पर विकास की धारा से सभी को एक साथ जोड़ सके।

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. डी. उमादेवी ने कहा कि बच्चों को सकारात्मक ज्ञान देना शिक्षक का कर्तव्य है। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. जे. सुरेंद्रन ने कहा कि लगातार लिखने, पढ़ने, बोलने का अभ्यास करें तो कोई भी भाषा सीखी जा सकती है। सम्मानित अतिथि के रूप में श्री सेंदिल कुमार ने कहा कि बहुत सारी व्यक्तिगत समस्याएँ होने के बावजूद इतने प्रतिभागियों का यहाँ आना यह दर्शाता है कि सीखने में किसी भी समस्या का होना बहुत बड़ी बात नहीं है और सीखने के लिए कोई उम्र की सीमा नहीं होती। पाठ्यक्रम संयोजक प्रो. गंगाधर वानोडे ने कहा कि हमें एक से अधिक भाषा सीखने में बहुत लाभ होता है। इस प्रशिक्षण से सभी अध्यापकों के ज्ञान में नवीनता आई होगी जो आगे चलकर अपने छात्रों को देंगे। पाठ्यक्रम प्रभारी डॉ. फत्ताराम नायक, प्राध्यापक डॉ. दीपेश व्यास ने भी अपनी बात रखी।

इस कार्यक्रम का संचालन विष्णुप्रिया द्वारा किया गया। आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन जी. जयलक्ष्मीद्वारा प्रस्तुत किया गया। इस पाठ्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने हस्तलिखित पत्रिका 'पुदुच्चेरी' की रचना की। अंत में राष्ट्रगान से कार्यक्रम का समापन हुआ। इस नवीकरण पाठ्यक्रम में कुल 66 (महिला-64, पुरुष-02) प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

485वें नवीकरण पाठ्यक्रम

ज्ञात हो कि केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र द्वारा पांडिचेरी राज्य के सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत हिंदी अध्यापकों/हिंदी प्रचारकों के प्रशिक्षण के लिए '485वें नवीकरण पाठ्यक्रम' का उद्घाटन समारोह दि. 03.06.2025 को जीवानंदम सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय, करमनीकुप्पम, पांडिचेरी के सभागार में संपन्न किया गया। सम्मानित अतिथि के रूप में जीवानंदम सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय, करमनीकुप्पम, पांडिचेरी के प्राचार्य तिरुकेशव, विशेष अतिथि के रूप में सहायक प्रोफेसर (हिंदी) एवं द.भा.हिं. प्रचार सभा चेन्नई तथा त्रिचि के कार्यकारी सदस्य डॉ. एन. डॉ. एन. सेंदिल कुमरन तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान, मैसूर केंद्र के पूर्व क्षेत्रीय निदेशक प्रो. एम. ज्ञानम उपस्थित थे। इस अवसर पर पाठ्यक्रम संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे एवं पाठ्यक्रम प्रभारी डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास, अतिथि प्रवक्ता एवं डॉ. एस. राधा उपस्थित थे। ❑

प्रतिनियुक्ति

केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र द्वारा पांडिचेरी राज्य के सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत हिंदी अध्यापकों/हिंदी प्रचारकों के प्रशिक्षण के लिए '485वें नवीकरण पाठ्यक्रम' का आयोजन दिनांक 03.06.2025 से 14.06.2025 तक किया गया।

जिसमें कक्षा अध्यापन कार्य हेतु प्रो. गंगाधर वानोडे, क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. फत्ताराम नायक, एसोसिएट प्रोफेसर एवं डॉ. दीपेश व्यास एवं प्रशासनिक तथा लेखा कार्य संपन्न करने हेतु डॉ. एस. राधा, कार्यालय अधीक्षक को प्रतिनियुक्त किया गया। केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे ने बतौर संयोजक के रूप में भाग लिया। ❑

विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण कार्यक्रम संपन्न

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) के अवसर पर दिल्ली क्षेत्रीय केंद्र परिसर में वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय निदेशक प्रो. अपर्णा सारस्वत के नेतृत्व में वृक्षारोपण किया गया। इस मौके पर संस्थान के शैक्षणिक व प्रशासनिक सदस्य उपस्थित रहे।

इस क्रम में शिलांग केंद्र द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण का कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस अवसर पर क्षेत्रीय निदेशक प्रो पार्थ सारथी पाण्डेय ने केंद्र के सभी कर्मचारियों के साथ वृक्षारोपण का कार्य किया।

साथ ही, उन्होंने लोगों में अपने पर्यावरण के प्रति सजग रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वैश्विक परिदृश्य में जलवायु संकट एक बहुत बड़ी समस्या बनती जा रही है। हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ हवा, पानी मिलना बहुत ही मुश्किल होगा।

ऐसे समय में हम सभी नागरिकों का कर्तव्य है कि अपनी आगामी पीढ़ी के लिए वृक्ष लगाएँ ताकि उनके जीवन में हमारा कुछ सकारात्मक योगदान हो सके।

इस अवसर पर संस्थान के सभी कर्मचारियों ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की तथा यह संकल्प लिया कि अधिक से अधिक वृक्षारोपण एवं उनका संरक्षण करेंगे। ❑

भुवनेश्वर केंद्र

153 वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम आयोजित

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के क्षेत्रीय केंद्र भुवनेश्वर द्वारा ओड़िशा राज्य के जाजपुर जिले के अंतर्गत हिंदी शिक्षा संस्थान, जाजपुर के हिंदी प्रचारकों के लिए दि. 03.06.2025 से 14.06.2025 तक 153 वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम गरिआपुर यू.जी. यू.पी. विद्यालय, गरिआपुर, जाजपुर टाउन में आयोजित किया गया। इसमें कुल 90 (74 महिला व 16 पुरुष) प्रतिभागी सम्मिलित हुए। उद्घाटन समारोह में अध्यक्ष के रूप में संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक एवं पाठ्यक्रम संयोजक डॉ. रंजन कुमार दास तथा मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त अवसर प्राप्त शिक्षक विरजा रत्न पंडित विभूति भूषण मिश्र, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती सरोजिनी नायक (प्रधान शिक्षिका, गरिआपुर यू.जी.यू.पी. स्कूल, जाजपुर टाउन) एवं अन्य सम्मानित मंचासीन अतिथि डॉ. चंद्र प्रताप सिंह (विषय विशेषज्ञ), डॉ. अरविन्द तिवारी (अतिथि प्रवक्ता, अनु.), डॉ. रवि शतपथी (सचिव), डॉ. उपेंद्र साहु (कार्यकारी सभापति), डॉ. बेणुधर महाराणा (उप सभापति), श्री जहीरुद्दीन खान (संयोजक) हिंदी शिक्षा संस्थान, जाजपुर, ओड़िशा उपस्थित रहे।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। जाजपुर जिले के हिंदी प्रचारकों ने नवीकरण के आयोजन हेतु संस्थान का आभार व्यक्त किया। क्षेत्रीय निदेशक डॉ. दास ने पाठ्यक्रम व संस्थान का परिचय देते हुए अध्यक्षीय टिप्पणी प्रस्तुत की। मंच संचालन श्री जहीरूद्दीन खान द्वारा किया गया।

दिनांक 14.06.2025 को समापन समारोह की अध्यक्षता क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रंजन कुमार दास ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री दामोदर जी (प्रधानाचार्य, लिसिअम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जाजपुर), विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती सरोजिनी नायक (प्रधान शिक्षिका, गरिआपुर यू.जी. यू.पी. स्कूल, जाजपुर टाउन), एवं अन्य सम्मानित मंचासीन अतिथि डॉ. चंद्र प्रताप सिंह (विषय विशेषज्ञ), डॉ. अरविन्द तिवारी (अतिथि प्रवक्ता, अनु.), डॉ. रवि शतपथी (सचिव, हिंदी शिक्षा संस्थान, जाजपुर), डॉ. उपेंद्र साहु (कार्यकारी सभापति), डॉ. बेणुधर महारणा (उप सभापति), हिंदी शिक्षा संस्थान, जाजपुर, डॉ. अजित प्रसाद महापात्र, पूर्व प्राचार्य, हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, कटक उपस्थित रहे।

इसमें प्रतिभागियों ने नवीकरण से संबंधित अपने अनुभवों को व्यक्त किया। अध्यापन कार्य डॉ. रंजन कुमार दास (क्षे. नि.), डॉ. लक्ष्मीधर दाश (सेवानिवृत्त प्राचार्य), डॉ. चंद्र प्रताप सिंह (विषय विशेषज्ञ), डॉ. अरविन्द तिवारी (अतिथि प्रवक्ता, अनुबंध) द्वारा किया गया।

मंच संचालन श्री जहीरूद्दीन खान द्वारा किया गया एवं धन्यवाद ज्ञापन सुश्री मोनालिसा पंडा, प्रतिभागी द्वारा किया गया।

इस नवीकरण में विवेकानंद विश्वकर्मा (लिपिक, अनु.) की देखरेख में प्रतिभागियों के लिए पंजीकरण फॉर्म, प्रमाण-पत्र एवं निवृत्ति प्रमाण-पत्र, पुस्तकों की बिक्री तथा अल्पाहार की व्यवस्था की गई। ❑

गुवाहाटी केंद्र

280 वाँ नवीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी, (असम) द्वारा राज्य होजाई जिला के सेवारत हिंदी शिक्षकों के लिए दिनांक 16 जून से 26 जून 2025 तक 10 दिवसीय 280वाँ नवीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षा विभाग द्वारा अधिकृत 50 शिक्षकों ने हिस्सा लिया। क्षेत्रीय निदेशक डॉ. चन्द्रशेखर की अगुवाई में प्रो. जय कौशल, (हिंदी विभाग, असम विश्वविद्यालय), श्रीमान राजेन ठाकुर, (प्रवक्ता, कृष्णा वरा बी.एड. कॉलेज, लंका) तथा पूर्ण प्रसाद उपाध्याय, (प्रवक्ता, मरकज एकेडमी), ने अध्यापन कार्य किया।

देशबंधु विद्यापीठ बालिका उच्च विद्यालय, होजाई, (असम) के प्रांगण में आयोजित 280वाँ प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में मनोज कांति भट्टाचार्य (प्राचार्य) शामिल हुए। क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. चंद्रशेखर चौबे द्वारा मुख्य अतिथि का औपचारिक स्वागत सत्कार कर जीतू कुमार गुप्ता, आकाश सिंह, मनीगुप्त, रसीद अहमद, सुमंत विश्वास आदि ने प्रशिक्षण प्राप्त करने आए शिक्षकों को संबोधित किया। दस दिनों तक चले नवीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिंदी भाषा शिक्षण, हिंदी व्याकरण, हिंदी साहित्य, मानक भाषा, वर्णमाला का शुद्ध उच्चारण आदि विषय शामिल किये गये। पाठ्यक्रम का समापन समारोह दिनांक 26 जून 2025 को आयोजित किया गया, जिसे और अधिक आकर्षित बनाने के लिए प्रशिक्षण में आये शिक्षकों ने कई सांस्कृतिक कार्यक्रम किये। शिक्षक सागर साहा, रशीद अहमद, आदि की अगुवाई में गीत-संगीत सम्पन्न हुआ।

इस समापन कार्यक्रम में होजाई जिले के विद्यालय निरीक्षक, माननीय रंजन कुमार डेका जी, शिक्षा विभाग, मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किये गये, साथ ही रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, होजाई के हिंदी विभाग के प्रो. डॉ. नागेश्वर यादव जी ने इस समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

क्षेत्रीय निदेशक डॉ. चंद्रशेखर चौबे ने मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष महोदय का स्वागत किया। समापन समारोह में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पूरा करने वाले सभी प्रतिभागी हिंदी शिक्षकों को प्रमाण-पत्र, लघु आहार आदि प्रदान किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया। कार्यक्रम का कुशलतापूर्वक संचालन प्रतिभागी अध्यापक मो. रशीद अहमद ने किया। ❑

शिलांग केंद्र

आधुनिक भारत की नवल प्रवाह है हिंदी : प्रो. पाण्डेय

आधुनिक भारत के निर्माण में हिंदी का योगदान सर्वाधिक है। यह एक भाषा मात्र नहीं अपितु इस देश की संस्कृति की वाहक है। पूर्वोत्तर क्षेत्र में हिंदी अपने विभिन्न रूपों में प्रवाहित होती है जो कि यहाँ की संस्कृति, परंपरा एवं स्थानीय साहित्य को अपने साथ लेकर चलती है। इसलिए हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि पूर्वोत्तर क्षेत्र में हिंदी का विकास प्रादेशिक भाषाओं के साथ ही संभव है। उक्त बातें केंद्रीय हिंदी संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थसारथी पाण्डेय ने मिज़ोरम के चम्फाई जिले में आयोजित 186 वें नवीकरण पाठ्यक्रम के उद्घाटन समारोह में कही।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के क्षेत्रीय केंद्र, शिलांग द्वारा मिज़ोरम राज्य के चम्फाई जिले के स्कूल हिंदी शिक्षकों के लिए 186वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम दिनांक 26.5.2025 से 07.06.2025 तक जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चम्फाई, मिज़ोरम में आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम के संयोजक शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक तथा पाठ्यक्रम प्रभारी श्री आकाश कुमार, शोधार्थी, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग थे। इस पाठ्यक्रम में मिज़ोरम राज्य के चम्फाई जिले के विभिन्न विद्यालयों के 69 हिंदी शिक्षकों ने प्रतिभागिता की।

दिनांक 27 मई 2025 को उद्घाटन सत्र का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र शिलांग के क्षेत्रीय निदेशक ने की। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती के. ललसियामलियानी, (जिला शिक्षा पदाधिकारी), चम्फाई, विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. एच. ललहृउआइत्लुआङा, (प्राचार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण केंद्र, चम्फाई) तथा सम्मानित अतिथि के रूप में श्री एच. ललएङ्ज़ामा, (हिंदी शिक्षा पदाधिकारी, चम्फाई, मिजोरम) उपस्थित थे। साथ ही, पाठ्यक्रम हेतु अतिथि अध्यापक डॉ अजय कुमार रंजीत, सहायक आचार्य, मिज़ोरम हिंदी प्रशिक्षण महाविद्यालय, आइजोल भी उपस्थित थे।

क्षेत्रीय निदेशक ने मंचासीन विद्वतजनों का स्वागत-सम्मान उत्तरीय एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा प्रकाशित हिंदी-मिज़ो शब्दकोश, शोध पत्रिका 'समन्वय पूर्वोत्तर' की प्रति भेंट कर किया। मुख्य अतिथि श्रीमती के. ललसियामलियानी ने सभी शिक्षकों से प्रशिक्षण के दौरान अनिवार्यतः उपस्थित होकर पाठ्यक्रम में सहभागिता सुनिश्चित करने का आग्रह किया। विशिष्ट अतिथि डॉ. एच. ललहृउआइत्लुआङा ने केंद्र द्वारा आयोजित इस पाठ्यक्रम के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की। श्री एच. ललएङ्ज़ामा जी ने भी मिजोरम में हिंदी के उत्थान के लिए विद्यालयी शिक्षकों की भूमिका को महत्वपूर्ण माना। इस कार्यक्रम का संचालन श्री आकाश कुमार एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अजय कुमार रंजीत के द्वारा किया गया।

दो सप्ताह के विधिवत् कक्षाओं के बाद दिनांक 7 जून 2025 को समापन सत्र का आयोजन किया गया। ❑

हिंदी शिक्षकों के लिए 187 वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के क्षेत्रीय केंद्र, शिलांग द्वारा त्रिपुरा राज्य के उत्तर त्रिपुरा जिले के हिंदी प्रचारकों एवं हिंदी शिक्षकों के लिए 187 वॉं हिंदी शिक्षक नवीकरण पाठ्यक्रम 02.06.2025 से 14.06.2025 तक त्रिपुरा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, धर्मनगर में आयोजित किया गया। पाठ्यक्रम का समापन समारोह 14 जून को समिति के सभागार में संपन्न हुआ ।

समापन समारोह में अध्यक्ष के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र के निदेशक एवं पाठ्यक्रम के संयोजक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय, मुख्य अतिथि के रूप में प्रचार समिति के अध्यक्ष श्री मनिंद्र कुमार सेन, विशिष्ट अतिथि के रूप में समाज सेवी श्री विधान चंद्र गोस्वामी, विशेष अतिथि एवं प्रचार समिति के उपाध्यक्ष विश्वतोष चौधरी एवं सचिव श्री शुभांशु दाम का मार्गदर्शन सभी प्रतिभागी शिक्षकों को प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय ने सभी अतिथियों का स्वागत स्मृति चिह्न एवं संस्थान के उत्तरीय से किया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप से जुड़े शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पाण्डेय ने नवीकरण पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए प्रतिभागियों को बधाई दी।

उन्होंने प्रतिभागियों को नवीकरण पाठ्यक्रम में प्राप्त ज्ञान को अपने अध्यापन कार्य में उपयोग करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि सीखना एक सतत प्रक्रिया है और शिक्षकों को हमेशा ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने प्रतिभागियों को शिलांग केंद्र की गतिविधियों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया और कहा कि शिलांग केंद्र त्रिपुरा और पूर्वोत्तर में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु सदैव प्रयासरत है।

मुख्य अतिथि एवं त्रिपुरा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अध्यक्ष श्री मनिंद्र कुमार सेन जी ने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी प्रतिबद्धता को स्वीकार करते हुए प्रतिभागी शिक्षकों से भी इस कार्य के लिए आग्रह किया। कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य समिति के सचिव शुभ्रांशु दाम जी द्वारा तथा धन्यवाद ज्ञापन समिति के सह सचिव श्री स्वपन पाल द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

इससे पूर्व नवीकरण पाठ्यक्रम का पंजीकरण दिनांक 2 जून 2025 को किया गया जिसमें उत्तर त्रिपुरा जिले के विभिन्न विद्यालयों के 76 (30 पुरुष एवं 46 महिला) हिंदी प्रचारकों एवं हिंदी शिक्षकों ने प्रतिभागिता की। पंजीकरण के उपरांत नवीकरण पाठ्यक्रम में अध्यापन कार्य प्रारंभकरने के पहले प्रतिभागियों के ज्ञान का आकलन करने के लिए पूर्व-परीक्षण लिया गया और उसका मूल्यांकन भी किया गया।

नवीकरण पाठ्यक्रम में दिनांक 2 जून से विधिवत कक्षाएँ प्रारंभ हुईं। इस नवीकरण पाठ्यक्रम में अध्यापन कार्य संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक एवं पाठ्यक्रम संयोजक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय, मिज़ोरम हिंदी प्रशिक्षण महाविद्यालय के सहायक प्रोफेसर डॉ अजय कुमार रंजीत, अतिथि अध्यापक श्री शुभाशुं दाम एवं श्रीमती सुतपा दाम ने किया। नवीकरण पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को विभिन्न विषयों का अध्यापन कार्य किया गया।

पाठ्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को गृह-कार्य देकर उसका मूल्यांकन कर और सभी प्रतिभागियों को परिचर्चा में सम्मिलित कर पाठ्यक्रम की गुणवत्ता में वृद्धि करने का प्रयास किया गया। प्रशिक्षण के बाद प्रशिक्षणार्थियों का पर-परीक्षण लिया गया एवं प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को विशेष प्रमाण-पत्र से पुरस्कृत किया गया। अंत में सभी प्रतिभागियों को पाठ्यक्रम का प्रमाण-पत्र एवं निवृत्ति पत्र दिया गया। ❑

कार्यालयी काम-काज में हिंदी को मिले बढ़ावा

हिंदी के प्रचार प्रसार तथा कार्यालयीन कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रधान महालेखाकार में शिलांग, मेघालय में दिनांक 18 जून 2025 को आयोजित कार्यशाला में केंद्रीय हिंदी संस्थान शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रोफेसर पार्थ सारथी पांडे ने मुख्य वक्ता के रूप में हिस्सा लिया।

कार्यक्रम के आरंभ में अपने उद्घाटन भाषण में उपमहालेखाकार धन लक्ष्मी चौरस्या ने कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डाला और कहा कि कार्यशाला में सम्मिलित होने वाले सभी अधिकारी और कर्मचारी गण मौलिक रूप से हिंदी में टिप्पणियां लिख सकें इसका प्रयास होना चाहिए। उन्होंने कहा कि कार्यशाला से प्रशिक्षित होने के बाद प्रतिभागी मसौदा लेखन पत्र लेखन आदि में राजभाषा हिंदी का प्रयोग करने में सफल होंगे।

उक्त कार्यशाला में प्रोफेसर पांडे ने दो सत्रों में क्रमशः कार्यालयी हिंदी के सैद्धांतिक पक्ष और उसके व्यावहारिक पक्ष पर प्रशिक्षण देकर प्रतिभागियों की समझ को विस्तार दिया तथा मौके पर अभ्यास कार्य भी करवाया। वरिष्ठ उप महालेखाकार धनलक्ष्मी चौरसिया के नेतृत्व में आयोजित कार्यशाला में पीआर रिंगख्लेम,एक्वारियस मैथ्यू नेवी हिस्सा लिया। कार्यशाला के अंत मेंसहायक निदेशक राजभाषा मोहम्मद जिया उल हक ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। ❑

मेघालय के मावसिन्राम में 188 वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम आयोजित

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) के क्षेत्रीय केंद्र, शिलांग द्वारा मेघालय के पूर्वी खासी हिल्स जिले के हिंदी शिक्षकों के लिए 188 वाँ हिंदी शिक्षक नवीकरण पाठ्यक्रम 09.06.2025 से 20.06.2025 तक आर.एम.एस.ए. माध्यमिक विद्यालय, मावसिनराम में आयोजित किया गया। पाठ्यक्रम के प्रथम दिन प्रतिभागी शिक्षकों के ज्ञान का आकलन करने के लिए उनका पूर्व परीक्षण लिया गया। तत्पश्चात पाठ्यक्रम में उद्घाटन सत्र का आयोजन हुआ जिसके अध्यक्ष केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र के निदेशक प्रो पार्थ सारथी पाण्डेय थे। उद्घाटन सत्र का संचालन पाठ्यक्रम प्रभारी श्री आकाश कुमार ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन अतिथि अध्यापिका सुश्री लखमी रानी बोरा ने किया। पाठ्यक्रम का समापन समारोह 20.06.2025 को क्षेत्रीय केंद्र परिसर, शिलांग में संपन्न हुआ।

समापन समारोह में अध्यक्ष के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक एवं पाठ्यक्रम के संयोजक प्रो. पाण्डेय, मुख्य अतिथि के रूप में अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, शिलांग केंद्र के निदेशक प्रो. मौसमी गुहा बनर्जी, विशिष्ट अतिथि द्वय के रूप में पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान, शिलांग के निदेशक प्रो.(डॉ.) विजय कुमार द्विवेदी एवं होटल प्रबंधन संस्थान के पूर्व प्राचार्य प्रो. विजय कुमार का मार्गदर्शन सभी प्रतिभागी शिक्षकों को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में अतिथि अध्यापक श्री आकाश कुमार एवं सुश्री लख्मी रानी बोरा उपस्थित थे। कार्यक्रम में सभी अतिथियों का स्वागत स्मृति चिह्न एवं संस्थान के उत्तरीय से किया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप से जुड़े शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय नवीकरण पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए प्रतिभागियों को बधाई दी। उन्होंने प्रतिभागियों को नवीकरण पाठ्यक्रम में प्राप्त ज्ञान को अपने अध्यापन कार्य में उपयोग करने के लिए कहा। उन्होंने राष्ट्र निर्माण में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हुए शिक्षकों से हमेशा नवीन ज्ञान एवं तकनीक का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए सजग रहने का आग्रह किया। । मुख्य अतिथि प्रो. मौसमी गुहा बनर्जी ने शिक्षकों से शिक्षण में सकारात्मक अभिवृत्ति को अपनाते हुए बच्चों में भाषा कौशलों के विकास का आग्रह किया । विशिष्ट अतिथि द्वय प्रो.(डॉ.) विजय कुमार द्विवेदी एवं प्रो. विजय कुमार ने भी पूर्वोत्तर क्षेत्र में हिंदी के विकास के लिए विद्यालयी शिक्षकों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया ।

समापन समारोह में प्रतिभागियों ने संस्थान गीत(भारत जननी एक हृदय हो), देशभक्ति गीत, खासी समूह गीत एवं कई एकल हिंदी एवं खासी गीत प्रस्तुत किए गए । कार्यक्रम का संचालन प्रतिभागी शिक्षक बंसीदालिन लिंग्खोई तथा धन्यवाद ज्ञापन मनोज कुमार तिवारी ने किया । ❑

पृष्ठ 1 का शेष...

कि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल पर संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 2014 में 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषणा के पश्चात सम्पूर्ण विश्व भारत की इस अद्भुत सांस्कृतिक विरासत से और अधिक परिचित हुआ है और प्रत्येक वर्ष इस कार्यक्रम में विश्वभर में लोगों की भागीदारी बढ़ती ही जा रही है।

योग पर चर्चा करते हुए प्रो. दुबे ने कहा कि योग का उद्देश्य आत्मा परमात्मा से मिलन द्वारा समाधि की अवस्था को प्राप्त करना है। इसी अर्थ को सोचकर कई साधक योग साधना द्वारा मोक्ष के मार्ग का वरण करते हैं। योग के अंतर्गत यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा ध्यान समाधि को साधक चरणवद्ध तरीके से पार करता हुआ कैवल्य को प्राप्त करता है। 'पहला सुख निरोगी काया बाद में धन और माया' की कहावत को दोहराते हुए प्रो. दुबे ने कहा कि योग के अभ्यास से व्यक्ति में प्रेम आत्मीयता एवं सदाचार के गुण स्वतः विकसित होते हैं। उन्होंने कहा कि आज की भागती दौड़ती दुनिया भी वर्णित कर्मयोग, हठयोग, भक्ति योग, ज्ञान योग, अष्टांग योग समाहारो की नई रचनात्मकता एवं शांतिदायक शिक्षा प्रदान करने में सक्षम है। उन्होंने केंद्र के सभी सदस्यों से योग को अपने दैनिक जीवन का अंग बनाने का आह्वान किया।

योग शिक्षक श्री कौशल सिंह के साथ कार्मिकों ने विभिन्न योग क्रियाओं का अभ्यास किया, जिनमें आसन, प्राणायाम और ध्यान शामिल थे।

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्कः प्रो. वानोडे

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के हैदराबाद केंद्र के

बहुउद्देशीय कक्ष में 'विश्व योग दिवस' सभी शैक्षिक एवं प्रशासनिक सदस्यों द्वारा मनाया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानाडे ने सभी सदस्यों का उत्साह वर्धन करते हुए कहा कि 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क' निवास करता है। प्रो. वानोडे ने कहा कि 'योग क्रांति की मशाल जलाओ, जीवन खुशहाल बनाओ।' योग तन-मन को स्वस्थ रखेगा। उसके पश्चात योग मंत्र के उच्चारण के साथ ही शैक्षणिक व प्रशासनिक सदस्यों द्वारा योगाभ्यास किया गया। इस अवसर पर अतिथि अध्यापक (अनु.) डॉ. दीपेश व्यास, कार्यालय अधीक्षक डॉ. एस राधा, डॉ. संदीप कुमार, श्री सजग तिवारी, श्री शेख मस्तान वली, संस्थान के सेक्युरिटी, अडापु लक्ष्मण, एस. बसंत राव, इलेक्ट्रीशियन वसीम, सफाई कर्मचारी श्रीमती भानु आदि उपस्थित थे।

भुवनेश्वर केंद्र – अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के शुभ अवसर पर भुवनेश्वर केंद्र पर योग कार्यक्रम किया गया। जिसमें संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रंजन कुमार दास व अनुबंधित कार्मिक श्री विवेकानंद विश्वकर्मा, श्री अजय कुमार सिंह, श्री संतोष कुमार रणा, श्री शेख नसीमुद्दीन द्वारा ताड़ासन, नटराज आसन, वज्रासन, मंडूकासन, अनुलोम-विलोम, पद्मासन, ध्यान मुद्रा आदि योगासन का अभ्यास किया गया। योगासन पश्चात समस्त योग साधकों के लिए अल्पाहार की व्यवस्था की गयी।

अहमदाबाद केंद्र – केंद्रीय हिंदी संस्थान, के अहमदाबाद केंद्र, पर योग दिवस का आयोजन किया गया। इस दौरान 'योग दिवस' आयोजन के संदर्भ और इसके महत्त्व पर चर्चा की गई। क्षेत्रीय निदेशक ने कहा कि सभी स्वीकारते हैं कि आधुनिकता के इस दौर में योग हमारी जीवन शैली को संतुलित और सुखद बनाने के लिए बहुत उपयोगी है। निस्संदेह जो लोग शारीरिक और मानसिक रूप से ज्यादा स्वस्थ होगें उनका भविष्य भी दूसरों की तुलनात्मक मे अधिक अच्छा रहेगा। सामाजिकों की बढ़ती रुचि के फलस्वरूप आने वाले समय में इसकी लोकप्रियता और अधिक बढ़ने वाली है। पूरी दुनिया के लिए आज के समय में स्वस्थ रहना बहुत बड़ी समस्या बन चुकी है और इसका सर्वोत्तम उपाय हमारे पास योगाभ्यास है।

शिलांग केंद्र – केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र परिसर में 'योग दिवस' का आयोजन किया गया। इस आयोजन में क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय की सक्रिय भूमिका रही। इस दिवस के अवसर पर संस्थान के सभी कर्मचारी-जॉर्जिना लिंग्दोह, पेटरूस खारकंगर, एरिक एच

रिंजाह, प्रदीप छेत्री, मेडरिंगटन खारसाहनोह, निरिजा मराक एवं अन्य सुरक्षा कर्मचारी उपस्थित थे। इस अवसर पर संस्थान के सभी सदस्यों ने अपने जीवन में योग को अपनाने का संकल्प लिया तथा यह निश्चय किया कि प्रतिदिन कुछ समय योगाभ्यास करेंगे ताकि तन एवं मन से स्वस्थ रहें। ❑

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर योगाभ्यास कार्यक्रम के उपरांत मुख्यालय आगरा तथा दिल्ली केंद्र के कार्मिकों का समूह चित्र

अर्थांतर

'कुल' और 'वंश'

इन दिनों जाति जनगणना के बीच धार्मिक कथावाचन को लेकर गरमाई राजनीति 'कुल' और 'वंश' तक पहुँच गई है। कोई 'कुल' पूछ रहा है तो कोई 'वंश' की दुहाई दे रहा है। आइए देखते हैं मोटे तौर पर 'कुल' और 'वंश' मे क्या अंतर है?

अरबी का 'कुल' (सब, पूरा) विशेषण है। अरबी का ही 'बिल्कुल' - हिंदी 'बिलकुल' (सर्वथा, पूरी तरह से) क्रियाविशेषण है। (अरबी के 'बिल्' माने 'के साथ' ।)

उपर्युक्त पैरे के 'कुल' से बिलकुल भिन्न संस्कृत का 'कुल' संज्ञा है, जिसे 'सुकुल' (सद्वंश, कुलीन) और 'कुलीन' (ऊँचे कुल में जन्मा हुआ) में याद कीजिए और 'कुलगुरु' (वंश का पुरोहित), 'कुलदेवता' (वह देवता, जिस की पूजा कुलविशेष में पीढ़ियों से होती आ रही हो), और 'कुलवधू' (भले घर की बहू) में भी देखा जाता है।

यों तो इस 'कुल' का मुख्य अर्थ 'एक मूल-पुरुष से उत्पन्न पीढ़ियों का समूह' या 'एक जातिवालों का समूह' है, पर यह 'कुलपति' और 'कुलसचिव' में भी मौजूद है (पूर्वार्ध में), जहाँ इस का अर्थ संस्था-विशेष (प्राचीन गुरुकुल और आधुनिक विश्वविद्यालय) के विद्यार्थियों आदि का समूह है। 'गुरुकुल' में भी यही 'कुल' है (उत्तरार्ध में)।

अब 'वंश'। 'वंश' एक ओर तो 'कुल, कुटुंब, परिवार, जाति' आदि है, पर दूसरी ओर 'बाँस' है। 'वंशवृक्ष' बाँस के पेड़ के अलावा 'किसी कुल के पूर्व-पुरुषों तथा वर्तमान सदस्यों की वृक्ष के ढंग पर बनाई गई तालिका' है। 'वंशहीन' में 'वंश' का मतलब 'संतान' समझिए।

'कुल' प्रमुखतः 'संबंधों की ऐतिहासिक संबद्धता के साथ सामूहिकता' को इंगित करता है, जबकि 'वंश' प्रमुखतः 'संबंधों की ऐतिहासिक संबद्धता के साथ श्रृंखलाबद्धता' को इंगित करता है। 'कुलावली' शब्द नहीं होता, 'वंशावली' होता है।

उदाहरण के लिए - 'क्षत्रिय' 'कुल' के डॉ. पराक्रम सिंह 'दुर्गवंश' में उत्पन्न सन्तप्रकाश सिंह के 'वंश' (=संतान) है।

प्रस्तुति : अनिल तिवारी

प्रकाशन विभाग

संस्थान प्रकाशनों की बिक्री से संबंधित भुगतान को ऑनलाइन स्वीकार करने की सुविधा उपलब्ध है इसके लिए पृथक से खाता खोला गया है। क्यू आर कोड के माध्यम से भी भुगतान किया जा सकता है। खाता विवरण इस प्रकार है-

Account Holder's Name:
THE KENDRIYA
HINDI SHIKSHANA MANDAL AGRA
Account Number : 42583260224
IFSC : SBIN0017686
MICR : 282002047
Branch : KHANDARI CROSSING AGRA

नोटः 1. संस्थान की प्रकाशन सूची संस्थान वेबसाईट www.hindisansthan.in पर उपलब्ध है।
2. सूची में से चयनित पुस्तकों का क्रयादेश ई-मेल publicationmanagerkhs@gmail.com पर भेजा जा सकता है।

Merchant Name :
THE KENDRIYA HINDI SHIKHSANA MANDAL
UPI ID : thekhsmagra@sbi

भारतीय भाषाओं की सहचरी है हिंदी: अमित शाह

राजभाषा विभाग के स्वर्ण जयंती समारोह में संस्थान के निदेशक ने लिया हिस्सा

"जब हम लोग भारत की स्वतंत्रता की शताब्दी मना रहे होंगे तब भारत के स्वाभिमान के पुनर्जागरण के जितने भी प्रयास हुए हैं, उन सभी प्रयासों के इतिहास में राजभाषा का नाम स्वर्णिम अक्षरों से अंकित कर दिया जाएगा'- 'केंद्रीय गृहमंत्री'"

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा कि हिंदी सभी भारतीय भाषाओं की सहचरी है, इसे किसी भी हाल में अन्य भारतीय भाषाओं का प्रतिद्वंद्वी नहीं समझा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं है बल्कि राष्ट्र की आत्मा है।

26 जून 2025 को नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में राजभाषा विभाग द्वारा 'स्वर्ण जयंती समारोह' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता भारत सरकार के माननीय गृह मंत्री अमित शाह ने की। केंद्रीय मंत्री ने भाषाओं को जीवंत और समृद्ध बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि जब तक कोई व्यक्ति अपनी भाषा पर गर्व नहीं करेगा अपनी भाषा में अपनी बात नहीं करेगा तब तक वह गुलामी की मानसिकता से मुक्त नहीं हो सकता।

इस मौके पर डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन ने दक्षिण भारत में हिंदी की स्थिति और लोगों में हिंदी के प्रेम के प्रति अपनी बात रखते हुए कहा कि दक्षिण भारत के लोक मानस में हिंदी का विरोध नहीं है। श्री अतुल कोठारी ने इस बात पर बल दिया कि हमें देश के अंदर के साथ-साथ बाहर भी अंग्रेजी के बजाय हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए। श्री भर्तृहरि महताब ने अपने उद्बोधन में कहा कि राजभाषा हिंदी भारतीय भाषाओं की विविधता में एकता की भावना को जागृत करने का काम करती है। श्रीमती रेखा गुप्ता ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं माननीय गृह मंत्री अमित शाह का नेतृत्व प्राप्त होने के पश्चात सभी सरकारी कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की भावना बढ़ी है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष माननीय गृह मंत्री ने हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का प्रशासन और शिक्षा में प्रयोग बढ़ाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि किसी भी देश का गौरव तभी अपना वास्तविक स्थान पा सकता है, जब उसका प्रशासन उस देश की अपनी भाषा में होता हो। उन्होंने कहा कि जब हम लोग भारत की स्वतंत्रता की शताब्दी बना रहे होंगे तब भारत के स्वाभिमान के पुनर्जागरण के जितने भी प्रयास हुए हैं, उन सभी प्रयासों के इतिहास में राजभाषा का नाम स्वर्णिम अक्षरों से अंकित किया जाएगा। आजादी के 75वें वर्ष के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए पांच प्रणों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री जी का पहला प्रण गुलामी की मानसिकता से मुक्ति का है।

जब तक व्यक्ति अपनी भाषा का गौरव नहीं करता, अपनी अभिव्यक्ति अपनी भाषा में नहीं करता, अपनी सोच विश्लेषण और निर्णय करने की क्षमता को अपनी भाषा में नहीं गढ़ता, तब तक वह गुलामी की मानसिकता से मुक्त नहीं हो सकता।

हम अपनी संस्कृति को भाषा से काटकर आगे नहीं बढ़ा सकते। उन्होंने 'वंदे मातरम' के लेखक श्री बंकिम चंद्र चटर्जी की जन्म शताब्दी की भी बधाई दी। उन्होंने बताया कि अपने 11 साल के कार्यकाल में माननीय प्रधानमंत्री ने एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम की शुरुआत की।

काशी तमिल संगमम, काशी तेलुगू संगमम, सौराष्ट्र तमिल संगमम, शाश्वत मिथिला महोत्सव और भाषा संगम ने देश की एकता को मजबूत करने के लिए एक अच्छी शुरुआत दी है। भाषा संगम की पहल पर संविधान में मान्यता प्राप्त 22 भारतीय भाषाओं में छात्रों को बोलचाल के 100 वाक्यांश सीखने को प्रेरित किया गया है। यह एक शुरुआत मात्र है। यह शुरुआत वट वृक्ष के एक बीज की तरह है, जो भविष्य में एक विशाल वृक्ष की तरह दिखाई पड़ेगा।

'हिंदी शब्द सिंधु' कोश का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि हिंदी शब्द सिंधु राजभाषा को स्वीकृत, लचीला और समावेशी बनाने का प्रयास है। जहां भी अवसर मिल रहा है, वहां हिंदी शब्द सिंधु में सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों का अधिक से अधिक समावेश किया जा रहा है।

इस कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में माननीय केंद्रीय गृह मंत्री, दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता, गृह राज्यमंत्री श्री बंडी संजय कुमार, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब, राज्यसभा सांसद डॉ. सुधांशु त्रिवेदी एवं राज्यसभा सांसद श्रीमती सुधा मूर्ति के साथ-साथ शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव श्री अतुल कोठारी एवं विख्यात हिंदी शिक्षाविद एवं लेखिका डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन और राजभाषा विभाग के पूर्व सचिव श्री बालेश्वर राय की विशेष उपस्थिति रही। उद्घाटन समारोह के पश्चात दूसरा सत्र आयोजित किया गया जिसका शीर्षक 'राजभाषा विभाग @50- प्रगति और समरसता की ओर' रहा। इसके पश्चात अर्धसैनिक बलों द्वारा देशभक्ति आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति की गई।

तदुपरांत कार्यक्रम का समापन सत्र हुआ। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की ओर से माननीय निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी एवं दिल्ली केंद्र पर भाषाविज्ञान के प्रो. धनजी प्रसाद द्वारा सहभागिता की गई। ❑

संरक्षक
प्रो. सुरेन्द्र दुबे

प्रधान संपादक
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी

संपादक
डॉ. अपर्णा सारस्वत

संपादन सहयोग
अनिल तिवारी

टाइप सेटिंग
योगेन्द्र सिंह राणा

मुद्रक : एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.)

संस्थान समाचार में प्रकाशित समाचारों का स्रोत केंद्रीय हिंदी संस्थान के विभिन्न विभागों/केंद्रों से प्राप्त सामग्री है। संस्थान समाचार के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव संपादक के पास भेज सकते हैं। संस्थान समाचार का ई-मेल: sansthansamacharkhs2021@gmail.com

सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल आगरा-282005 द्वारा वितरण हेतु दिल्ली केंद्र से प्रकाशित।